The main point for determination is not whether these two resolutions are indentical or not. That is not the point to be determined. Again, the question whether the resolution moved by Shri Alvares is the same as the earlier one, as contemplated in rule 182, is not also relevant. The question is, as put by Dr. Aney, whether the objective covered by the resolution of Shri Alvares is covered by the resolution moved by Shri Sonavane or not. I hold that it has been substantially covered and it is substantially the same. There is no point of order and the resolution of Shri Alvares is barred.

Shri Nath Pai: Sir, we are bound to abide by your decision. But on a technical point, a very important matter has been debarred from being discussed in the House. May I, therefore, at least expect from the Minister an assurance that the Government is seized of the matter? The matter is delicate and it is urgent. Taking into consideration the overwhelming support that the motion has got from all sections of the House, may we have an assurance that the Government will not follow dilatory tactics, but, respecting the wishes of the people of Goa, will take a speedy decision on the matter? May we have an assurance on that?

Mr. Deputy-Speaker: The rules of the House will cover the resolution.

Shri Nath Pai: I want a specific answer from him. What is the reply? It is not a matter of procedure.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member can meet the hon. Minister later. Shri Kachhavaiya.

15.35 hrs.

RESOLUTION *RE.* MANUFACTURE OF NUCLEAR WEAPONS

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : उपाध्यक्ष महोदय मैं सदन में निम्नलिखित संकल्प पेश करता हूं :—

"इस सभा की राय है कि भारत सरकार को आणविक अस्त्रों का निर्माण करना चाहिय।"

Mr. Deputy-Speaker: Resolution moved:

"This House is of opinion that Government of India should manufacture nuclear weapons."

The time allotted is an hour and a half.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : मैं चाहता हूं कि अणु-शक्ति विभाग से जो सम्बन्धित मंत्री जी हैं उन्हें हाउस में बुलाया जाय ।

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Hathi): I am here. The Prime Minister will reply.

श्री हुकम चन्द कछवाय : उपाध्यक्ष महोदय, अभी हाल ही में कुछ दिनों पहले इस सदन् ने अपनी इच्छा प्रकट की थी कि हमारे देश की जो परिस्थिति है, हमारे देश से लगा हुआ जो हमारा रदुश्मन चीन है, उसने अणु बम का विस्फोट किया, उसके कारण सारे देश में जो परिस्थिति पैदा हुई और देश के सामने जो एक समस्या खड़ी हुई उस के बारे में इस सदन् में विचार किया गया। काफ़ी सदस्यों ने अपनी इच्छा प्रकट की कि भारत सरकार को अणु बम बनाना चाहिए परन्तु हमारी सरकार के द्वारा जो उत्तर दिया गया । हमारे प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री द्वारा जो उत्तर दिये गये, उन के उन

[श्री हुक्म चन्द कछवाय]

उत्तरों से हमें ऐसा लगा कि दोनों मंत्रियों ने सदन् की इच्छाओं का आदर नहीं किया, सदन का सम्मान नहीं किया और सदन् का अपमान किया है । ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने सदन् की इच्छा को नहीं माना ।

मैं इस सम्बन्ध में यह कहना चाहता हूं कि आखिर उसकी आवश्यकता हमें क्यों है ? आज हम देखते हैं कि चीन के साथ हमारा झगड़ा पिछले अनेकों वर्षों से चल रहा है और अभी भी उसकी नीयत साफ़ नहीं है और उसकी ओर से बराबर हमले का ख़तरा बना हुआ है । इसी चीज को दृष्टि में रखते हुए हम ने पिछली बार 21 नवम्बर, सन् 1962 को इस सदन में संकल्प किया था, सब सदस्यों ने पवित्र संकल्प किया था कि हमारी भूमि पर चीन ने गैरकानूनी तौर से जो कब्जा किया हुआ है उस तमाम अपनी भूमि को, एक, एक इंच भूमि को जब तक हम उसे उससे पुनः छीन नहीं लेंगे तब तक हम भारतवासी चैन से नहीं बैठेंगे। आज उस की तैयारी के लिये हमारी सरकार नये, नये हथियार ख़रीद रही है । और इन सब हमारी तैयारियों का एक ही उद्देश्य है कि हम चीन से डट कर मुकाबला कर सकें । आज जो हम नये से नये और मौर्डन हथियार हासिल करना चाहते हैं तो उन में यह अणुबम भी एक नया हथियार है और उसे भी हमें बनाना चाहिए । लेकिन अणु बम या आणविक अस्त्र के लिए हमारे प्रधान मंत्री ने यह कह कर टाल दिया कि इसमें काफ़ी पैसा लगेगा । अब डा० भाभा ने अपने वक्तव्य में कहा है कि इस में 17 लाख रुपया लगगा । लेकिन जहां तक हमारे शास्त्री जी का सवाल है वे तो महज एक शास्त्री हैं और वे इस वैज्ञानिक विषय से कैसे मेल बिठा सकते हैं ? शास्त्र और विज्ञान यह दोनों बराबर के नहीं हैं। इस विषय को वैज्ञानिकों के ऊपर छोड़ देना चाहिये कि वे इस के बारे में विचार करें और पता लगायें कि इस पर कितनी लागत आयेगी । अणुबम बनाने में कितने पैसे लगेंगे इसका पता उन वैज्ञानिकों को लगाने को कहा जाय। यह शास्त्रीजी का विषय नहीं है इसलिये उन्हें इस बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए । इस बारे में सदन् की राय ली जाय, जनमत संग्रह करना चाहिए और जनता की राय लेनी चाहिए कि आज हमें अणु बम बनाने की आवश्यकता है या नहीं और हमें इसे बनाना चाहिए कि नहीं ।

चीन से हमारा झगड़ा कई सालों से चला आ रहा है, और हमले का बराबर ख़तरा बना हुआ है । यह ठीक है कि हमें अपने देश की हर एक क्षेत्र में तरक्की करनी है और इसलिए हम बड़ी बड़ी योजनाओं पर अमल कर रहे हैं। हमें खेती का उत्पादन बढ़ाना है, देश में औद्योगिकरण करना है लेकिन क्या यह कभी सोचा गया है कि अगर कहीं चीन जैसा दुश्मन हमारे विरुद्ध अणुअस्त्र का प्रयोग कर बैठे तो हमारी तमाम योजनाएं धरी की धरी रह जायेंगी, एक एटम बम यहां के तमाम मानव समाज को तहस नहस कर डालेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें शत्रु से अपने देश को बचाने के लिए आणविक अस्त्र का निर्माण करना चाहिए । यह बात ज़रूर है कि हम शांति के प्रेमी हैं और हम शांति के मार्ग पर चलते हुए दुनिया को भी उसी रास्ते पर चलते देखना चाहते हैं लेकिन शांति उसी आधार पर कायम रह सकती है और उस के वहां बनी रह सकती है जिस के कि पास शक्ति होती है । हमारे सामने अमरीका और रूस यह दो शक्तिशाली राष्ट्र मौजूद है। चूंकि दोनों ही हर एक दृष्टि से काफ़ी बलशाली हैं इसलिए दोनों में झगड़ा नहीं होता है । कभी अमरीका ने रूस

पर हमला करने की नहीं सोची न ही रूस ने अमरीका पर हमला करने की सोची। चीन के सामने आज दो दुश्मन हैं। एक तो अमरीका दुश्मन है और दूसरा दुश्मन उसका भारत है। लेकिन वह कभी अमरीका पर हमला करने की नहीं सोचता क्योंकि अमरीका काफी ताकतवर है और अमरीका के पास सभी आधुनिक अस्त्र-शस्त्र और एटम बम आदि हैं और इस कारण वह अमरीका की ओर निगाह नहीं दौड़ाता है जब कि वह हमें लगातार दिक करता रहता है और उसने हमला करके हमारी भूमि पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया है। इस नाते हमें अपने को शक्तिशाली बनाना बहुत आवश्यक हो जाता है और अणु बम का निर्माण करना भी बहुत जरूरी है। अब यह कहना कि आवश्यकता पड़ने पर हम विदेशों से अणु बम ले लेंगे और यह कि विदेशों ने चीन के विरुद्ध हमारी सहायता करने का वचन दिया है हम इन वायदों पर भी भरोसा करके बैठे नहीं रह सकते। यह ठीक है कि विदेशों के साथ हमारा इस बारे में एग्रीमेंट हो गया है कि वे अणु बम से भी हमारी सहायता करेंगे लेकिन हम उनके वायदे को लेकर चाटेंगे अगर संघर्ष छिड़ गया और ऐन मौके पर उन्होंने यदि हमें आणविक अस्त्र नहीं सप्लाई किये ? उस हालत में हम क्या करेंगे। हमने रूस के साथ मिग विमानों का ऐग्रीमेंट किया था लेकिन हकीकत क्या है इसे कौन नहीं जानता ? रूस से कितने मिग विमान भारत आये हैं ? दरअसल वह ठीक तरह से उस बारे में अपने किये गये वायदे को निभा नहीं रहे हैं। इस लिए हमें किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए और अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए। हमें अपनी रक्षा के लिए किसी की ओर नहीं देखना चाहिए। एटम बम को बनाने पर जो खर्च होगा, वह भारत की जनता देगी। भारत की जनता में अपने देश की सुरक्षा के लिये, अपने देश को जिन्दा रखने और उसको बलशाली बनाने के लिये भूखी-नंगी होते हुए भी त्याग और बलिदान करने की शक्ति है। हमने हाल ही में देखा कि जब देश पर संकट आया, तो जनता ने देश की सुरक्षा के लिये दिल खोल कर धन दिया। अगर शस्त्रों का निर्माण करने के लिए धन की आवश्यकता है, तो सरकार जनता पर टैक्स लगा सकती है। जनता टैक्स देगी।

एटम बम बनाने के विरोध में शान्ति और अहिंसा की बात कही जाती है। सरकार एक ओर तो अहिंसा की बात करती है और दूसरी ओर प्रति वर्ष 800 करोड़ रुपये फौज पर खर्च करती है। यदि अहिंसा की नीति पर चलना है, तो फिर ये 800 करोड़ रुपये खर्च करने का क्या कारण है ? उस खर्च को समाप्त कर देना चाहिए। जब हम लड़ने की तैयारी कर रहे हैं, तो फिर यह देखना चाहिए कि लड़ने की तैयारी किस प्रकार की हो, हमें किन शस्त्रों की आवश्यकता हो सकती है, शत्रु कितना बलशाली है। शत्रु के पास जो हथियार हैं, वैसे ही हथियार हमारे पास भी होने चाहिएं। और वे हथियार लेने के लिए चाहे हमें कितनी ही बलि देनी पड़े, कितनी मुसीबत का सामना करना पड़े, चाहे अपनी योजनाओं में कटौती करनी पढ़े, वह सब हम करेंगे, लेकिन हमें अणु बम का निर्माण करना है।

कुछ लोग कहते हैं कि अणु बम बनाने से संसार में हमारा आदर कम हो जायेगा। लेकिन मैं उनसे यह पूछना चाहता हूं कि आज छोटे छोटे राष्ट्र भारत से क्यों नाराज हैं। इतना बड़ा देश होते हुए भी हमारे आस-पास के देश हम से नाराज हैं। इसका कारण यह है कि वे जानते हैं कि हमारे पास हथियार नहीं हैं। चाइना के पास इतने बड़े हथियार हैं और इसके लिए सारे देश उससे डरते हैं।

हमारे प्रधान मंत्री ने काहिरा कांफरेंस में यह सुझाव दिया कि चीन को समझाने के लिए एक शिष्ट-मंडल भेजा जाना चाहिए। प्रधान मंत्री इस सदन को बतायें कि कितने राष्ट्रों ने इस सुझाव को स्वीकार किया।

[श्री हुकम चन्द कछवाय]

हम शान्ति का नारा लगाते हैं, लेकिन कितने देश इसको मानते हैं ? जिस देश के पास शक्ति है, जो देश अपने बल-बूते पर और अपने पैरों पर खड़ा है, वही देश संसार में शान्ति रख सकता है ।

मैं सदन से यह निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे कितना भी खर्च हो, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, हम को अणु बम का निर्माण करना ही चाहिए। प्रधान मंत्री आश्वासन दें कि हम अणु बम का निर्माण करेंगे । समय पर हम उसका उपयोग करेंगे या नहीं, यह एक अलग बात है । अपने पास हथियार रहने पर भी दुनिया के देशों पर उसका काफ़ी असर पड़ता है ।

आज अपनी छोटी छोटी आवश्यकताओं के लिए हमें दूसरे देशों की ओर देखना पड़ता है, उन के पास दौड़ना पड़ता है कि हमें हथियार दीजिये । हम स्वयं वे हथियार क्यों नहीं बनाते हैं ? अपने हथियार बनाने के कारखानों में हम ने पिछले सालों में उस्तरे, प्लास्टिक और चूड़ियां जैसी चीजें बनाई । हाल ही में हमने उनका उत्पादन बन्द किया । अब हमें अपनी रक्षा के लिये अणु बम बनाने की व्यवस्था करनी चाहिए ।

मैं मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि वह बिना संकोच के इस प्रस्ताव को मान लें, क्योंकि यह देश की पुकार है । जनता यह चाहती है कि अणु बम बनाया जाये । हाल ही में मैं अनेक नगरों में घूमा । लोगों ने मुझसे सवाल पूछा कि चीन ने जो एटम बमका विस्फोटक किया है, हमारी सरकार उससे बचाव के लिए क्या कर रही है । एक संसद्-सदस्य होने के नाते जनता मुझ से पूछती है, मज़दूर पूछता है, व्यापारी पूछता है, विद्यार्थी वर्ग पूछता है सरकारी कर्मचारी पूछता है कि इस विषय में हमरी सरकार क्या करने जा रही है । इसलिए सारी जनता की बात को मान कर, एक संसद्-सदस्य अपने अनुभव के आधार पर जो बात कहता है, उस को मान कर सरकार को बिना संकोच के एटम बम का निर्माण करना चाहिए ।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि कमज़ोरी का लाभ किस तरह उठाया जाता है । एक बकरी भगवान के पास गई और उनसे प्रार्थना की कि हे भगवान, मुझे जो देखता है, वह खाने का प्रयत्न करता है, इसलिये आप मेरी रक्षा कीजिए । भगवान ने कहा कि जो तुम कहती हो वह सही है, लेकिन मैं प्रार्थना करना चाहता हूं कि तुम मेरे सामने से भाग जाओ, क्योंकि मेरा भी जी तुमको खाने को चाहता है ।

श्री कपूर सिंह (लुधियाना) : क्या भगवान मांसाहारी है ?

एक माननीय सदस्यः इन का भगवान मांसाहारी है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : एक कमजोर देश अपनी रक्षा तो कर नहीं पाता है, वह दूसरों को उपदेश देता फिरता है । आज हमारी दशा क्या है ? आज कितने लोग हमारी बात मानते हैं ? आज दुनिया में हमारी इज्जत क्या है ? शान्ति तभी होगी, जब हमारे पास शक्ति होगी । हमारे पास शक्ति होनी चाहिए । शक्ति हमारा धर्म है । जिस देश में शक्ति नहीं है, वह देश कभी उन्नति नहीं कर सकता है । आर्थिक, मानसिक, फ़ौजी, सब प्रकार की शक्ति हमारे पास होनी चाहिए । अगर हमारे पास अणु बम की शक्ति होगी, तो विदेशों में हमारी इज्जत होगी, दुनिया में हमारी वाह वाह होगी, और हम दुनिया को कह सकेंगे कि हमारे पास सब प्रकार के हथियार होते हुए भी हम शांति के मार्ग पर चल रहे हैं ।

Shri Khadilkar (Khed): Sir, since China exploded an atom bomb, some people are advocating that we should

adopt a nuclear posture and try to defend our country by acquiring nuclear weapons or manufacturing them. We will have to examine this problem from all its implications, its short-term and long-term effects on our defence and whether it involves a basic change in the policy which we have, and particularly this House has, again and again endorsed. Those of us who are advocating today the manufacture of atom bombs and nuclear weapons or acquisition of nuclear warheads or what not, have not studied the problem in all its aspects.

15.47 hrs.

[DR. SAROJINI MAHISHI *in the Chair*]

May I point out, in the west doay, though they are advanced, their living standards are high and though they are in a better position compared to us in every way, they are all the time under a constant fear of nuclear war. This country has not seen war. We were kept away from the first World War and in the second World War we were far away from the war frontiers. Therefore, we have a certain romantic attraction to war as well as nuclear weapons and such other weapons of destruction; and, we feel that it will act as a deterrent. We have got to examine from a scientific point of view whether nuclear weaponry or armoury is really a deterrent in the modern world where science is advancing faster and the weapons of destruction at the command of the human being have surpassed all imagination. There are smaller nations in Africa. Some people feel the atom bomb is just like a toy and in the same manner as a child is attracted towards a new toy, some Members in this House are looking at this new weapon as if it were a most attractive toy and we should acquire it. They think it will add to our prestige; if we manufacture, it, well and good. Whatever the consequences on the economy, we need not consider. But if we decide not to manufacture it, all right, get it from somewhere, from the American armoury, just as West Germany is getting today and it is posing a threat to the peace of the whole European continent. This approach is totally wrong, suicidal and against national interests. In my opinion, it is not going to serve the security of this country in any measure.

Why do I say this? The other day, when the foreign affairs debate was going on, I put forward a proposition, and still I hold to it, that we will have to give patient and quiet thought to the question whether the Chinese atom bomb is directed against India or against the American monopoly of atomic weapons.

China today has every right to have a grievance that it has been kept out of the world community. A nation of 60 to 70 crores, running an administration with a centralised government, making advance in every field, in the field of education, science, culture and everything, if that community is kept out, naturally, what would be the reaction? In our society, if you want to civilise a man, can you civilise him by keeping him an outlaw? If you keep him as an outlaw, he develops the mentality of an outlaw and with all irresponsibility he can attack the organised society. He is not responsible because he is not a member of the organised society. Those of us who look at China from this angle will realise that the only way to bring some sort of an understanding between China and the other world community is the way opened by this atom blast. let the western statesmen realise that even China, isolated at it is, not only from America and his allies but from the ideological point of view in the socialist camp also, it is getting more and more isolated, is capable of doing this. I do not support their ideological line. I have nothing to do with that. But the consideration that is most important on this occasion is whether we should continue this deadlock, continue this isolation of China, or as our former Prime Minister, who is the builder and architect

[Shri Khadilkar]

of our foreign policy and also regarding atomic weapons, has time and again said on the floor of the House, it should be our endeavour to bring back China to the world community as one of the honoured members of the world community? Then alone certain common sanctions that are developed in the United Nations regarding human rights, regarding disarmament and everything could be imposed on China, and legitimately China will have to abide by this law.

Today, those who are advocating here about getting nuclear weapons, including the mover of the resolution, have not made a distinction between atom bomb and nuclear weapons. Atom bomb is one thing. It is a weapon of ultimate destruction. But nuclear warheads are there. They are spreading all over the world. West Germany is today equipped with nuclear warhead weapons. The smaller nations are aspiring for it—UAR, Indonesia and others. One does not know whether Israel is doing something about it. If in this manner these weapons are spead all over and they go into the hands of a small nation—I am not naming the nation because it would be wrong to do so—and that nation is not mature enough to exercise restraint and responsibility in the use of those weapons, what would happen? It would start an explosion and another war of world destruction.

Therefore, the first proposition that I would like to place before this House is that our country and our Government must stand firm that proliferation or spread of nuclear armaments we will oppose and oppose firmly. I am happy that the new Labour Government in Britain is taking this posture. They have stated that with borrowed arms they will not fight. They have stated if they dream of having the old imperial prestige with borrowed arms, it is a wrong thing. They want a realistic approach. They have said that they will not join the race for armaments that is slowly developing, because it is very difficult to win over nations from this infatuation regarding nuclear weaponry in this world. We must take a lesson from it.

Then there are moral considerations. The moral conscience of all western scientists and others who are in this business has been roused. With one voice they are stating today that if we want to save this world the only way is that we must attempt to destroy all atomic weapons and to decide that we will not manufacture them. Certain limitations have been accepted, because of the fear of mutual destruction, by Soviet Union and America. This is a beginning. But ultimately we must attempt to destroy all these weapons. The basis of our policy has some moral considerations. I do not want to be sentimental nor idealistic. I am taking a pragmatic view of the matter from the point of view of defence. Can we afford to manufacture it? Will it not swallow up our economy? Will it not lead us to dependence outside? Will it not take away the freedom of our next generation if we accept more and more dependence so far as defence is concerned? Is it the pride of freedom to become dependent on more superior powers or supra nations in this world. These are considerations which must be borne in mind.

Therefore, I would appeal to this House to take a firm stand. It is not that in a lighter manner we can take decisions and change policies. We must declare in a determined manner, in a pragmatic way, as the other day the Prime Minister tried to say it openly, that we in this country will not try to join this race and we shall mobilise world opinion to see that atomic weapons are destroyed. We must state clearly that complete disarmament is our objective and we

[Shri Khadilkar]

shall try to achieve that. At the same time, there is some sort of a helplessness in saying openly that if we do not manufacture atom bomb there are some powers on whom we can depend quietly and they will come to our rescue. That sort of mental, psychological dependence and slavery should not be there. That attitude also must be cleared. It must be made clear that we do not want to adopt it.

I hope this resolution will afford a second opportunity to the Government to say openly without any diplomatic reservation that we stand by this. After celebrating Nehru Jayanti or Nehru's birth day recently, it would not be in the fitness of things that this House should think in terms of nuclear weapons.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : सभानेत्री महोदया, इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करने के साथ साथ मैं अपने मित्र श्री खाडिलकर से और अणु शस्त्र न बनाने की घोषणा करने वाली सरकार से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं । जब हम यह कहते हैं कि अणु शस्त्र का निर्माण शांति के नाम पर हम नहीं करेंगे तो क्या दूसरे अर्थों में यह भी हम घोषणा करते हैं कि जिस देश ने पौने नौ सौ वर्ष की लम्बी दासता के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की है वह सतरह वष के बाद ही अपनी आत्म-हत्या के दस्तावेज पर भी हस्ताक्षर कर दे ? आज जब कि सब राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित करने के लिए शक्ति संग्रह कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में अणु शस्त्रों की होड़ में भारतवर्ष का पिछड़ना या भारतवर्ष का पीछे रहना एक इस प्रकार के मार्ग का निर्माण है जिस को अगली पीढ़ियां क्षमा नहीं कर सकेंगी ।

इस सम्बंध में मैं विशेष रूप से दो बातों का उल्लेख करना चाहता हूं । हमारे प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने अभी कुछ दिन पहले गंटूर में जो अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ, वहां उस मंच से अणु शस्त्र न बनाने के सम्बंध में गांधी जी का हवाला दिया था जैसे अभी खाडिलकर साहब नेहरू जयंती का हवाला दे रहे थे । उस समय शास्त्री जी ने गांधीजी के चित्र को दिखाते हुए कहा था कि इस तस्वीर के नीचे बैठ करके हम अणु बम बनाने के सम्बंध में निश्चय करें ऐसी गद्दारी क्या गांधी जी की छत्रछाया में बैठ कर हम कर सकते हैं ? पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार अपनी दुर्बलताओं को गांधी और नेहरू की आड़ में आ कर क्यों छिपाना चाहती है । गांधीजी ने कभी अपनी अहिंसा की व्याख्या यह नहीं की कि मेरी अहिंसा किसी को कायर बनना सिखाती है। गांधी जी ने 1942 में अपनी अहिंसा की परिभाषा बदल दी थी जब "डू आर डाई" "करो या मरो" का नारा गांधी जी ने लगाया था । गांधी जी की अहिंसा उस वक्त ही बदल गई जिस समय काश्मीर पर पाकिस्तान ने हमला किया और गांधी जी ने फौजों को आशीर्वाद दे कर वहां भेजा । यहां एक बात और विशेष रूप में मैं गांधी जी की चर्चा के प्रसंग में कहना चाहता हूं । अंग्रेजी की एक पुस्तक है जिसका नाम है "नाउ इट कैन बी टोल्ड" । इस पुस्तक के लेखक हैं प्रोफसर ए० एम० बाली । इसमें उन्होंने गांधी जी के जीवन से सम्बंधित एक घटना का उल्लेख किया है । जब काश्मीर पर पाकिस्तान का हमला हुआ तो नेहरू जी गांधी जी के पास गए और उन से पूछा कि बापू अब हम क्या करें तो गांधी जी ने कहा कि उनका मुकाबला करने के लिए तुम फौज भेजो । इस पर नेहरू जी ने कहा कि हम फौजें तो भेज देंगे लेकिन आप इस पर अनशन आदि तो नहीं करना शुरू कर देंगे । गांधी जी ने कहा कि नहीं फौजें भेजनी चाहिए । जब नेहरू जी इस प्रकार गांधी जी का आशीर्वाद प्राप्त करके लौट रहे थे तो प्रोफेसर बाली ने लिखा है कि, जब वह दरवाजे तक आ गए तो गांधी जी ने फिर उनको बुलाया

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

श्रौर कहा कि सुनो, मेरी श्रपनी राय तो यह है कि श्रगर हमें पाकिस्तान की सेनाश्रों का मुकाबला करने के लिए श्रपनी सेनाएं भेजनी ही हैं तो बजाय इसके कि उनको काश्मीर की पहाड़ियों में जा कर कटवाया जाए, क्यों न उनको लाहोर के रास्ते कराची भेजा जाए। इस घटना को पढ़ कर मैं श्रवाक रह गया कि गांधी जी जैसा श्रहिंसावादी इस प्रकार का परामर्श कैसे दे सकता था। मैंने पंडित जी को वह पुस्तक दिखायी श्रौर उनसे पूछा कि यह घटना कहां तक सत्य है, तो पंडित जी उस को पढ़ कर हंसे श्रौर उन्होंने कहा कि यह बात कैसे पता लग गयी। तो मैंने कहा कि इतिहासज्ञ तो पाताल से भी सत्य की खोज कर ले श्राते हैं।

16 hrs.

मेरे कहने का श्रभिप्राय यह है कि जो गांधी जी काश्मीर में फौजें भेजने के विचार को श्राशीर्वाद दे सकते थे, जों गांधी जी पूर्वी पाकिस्तान के नर संहारों से विवश हो कर हिन्दुस्तान की सरकार को पूर्वी पाकिस्तान में सेनाएं भेज कर हिन्दुश्रों की रक्षा करने का परामर्श दे सकते थे, उस गांधी की श्राड़ में क्यों हमारी सरकार श्रपनी दुर्बलता को छिपाना चाहती है श्रौर कहती है कि गांधी जी के भारत में श्रणु बम नहीं बनाना चाहिए। गांधी जी ने कभी यह नहीं कहा कि देश शक्तिहीन हो कर श्रात्म हत्या कर ले। श्रगर सरकार गांधी जी के नाम से श्रणुबम न बनाने की घोषणा करती है तो फिर क्यों चह्वाण साहब यह घोषणा करते हैं कि हम श्रपनी सेना बढ़ा रहे हैं, हम माउनटेन डिवीजन बना रहे हैं। फिर तो यह होना चाहिए कि गांधी जी की श्रहिंसा का नाम ले कर भारत के प्रधान मंत्री पीकिंग में जा कर चाऊ एन लाई के दरवाजे पर श्रासन जमा कर श्रनशन प्रारम्भ कर दें श्रौर उनका हृदय परिवर्तन करने का यत्न करें। मेरा कहना है कि गांधी जी के नाम पर ऐसी बातें करना देश के लिए खतरनाक है।

दूसरे श्रणु शक्ति विभाग के बारे में मुझे शिकायत है। श्राज से साल डेढ़ साल पहले प्रधान मंत्री जी श्री जवाहर लाल नेहरू ने इसी सदन में यह घोषणा की भी कि श्रणु-शक्ति के विकास के सम्बंध में चीन भारत से दस साल पीछे है, श्राप इस का पिछला रिकार्ड उठाकर देख सकते हैं। मैं श्री हाथी जी से पूछना चाहता हूं कि इस प्रकार की जानकारी पंडित जी को किसने दी जिसके श्राधार पर उन्होंने इस सदन में यह घोषणा कर दी कि श्रणु शक्ति के विकास के सम्बंध में भारत से चीन दस साल पीछे है। मेरा श्रणुशक्ति विभाग पर श्रारोप है कि उसने पंडित जी को सच्ची जानकारी नहीं दी। इसी सम्बंध में मैं एक श्रौर बात श्रापके सामने रखना चाहता हूं। जब रूस श्रौर श्रमरीका ने श्रणुबमों के विस्फोट किए तो इसकी जानकारी पहले सरकार को भारतीय वैज्ञानिकों ने दी, श्रणुशक्ति विभाग को इसका पता ही नहीं चल पाया। इसका मुख्य कारण मेरी राय में यह है कि इस विभाग का सारा काम एक व्यक्ति के हाथ में है, वही इसका स्थायी श्रध्यक्ष है श्रौर वही इसका स्थायी सेक्रटरी है। क्यों नहीं भारत सरकार श्रणुशक्ति के विकास के लिए वैज्ञानिकों का एक बोर्ड बनाती जो श्रापस में बैठ कर विचार करे कि भारत श्रणुशक्ति के विकास की दिशा में कितना श्रागे जा सकता है। श्राज जो परि-स्थिति है उसका परिणाम यह है कि श्राज भारत संसार की शक्ति की होड़ में पिछड़ता चला जा रहा है।

श्रन्त में उपसंहार की श्रोर जाते हुए मैं दो एक श्रौर बातें कहना चाहता हूं। शांति की श्रपील करना बहुत श्रच्छी बात है। हम श्रपनी तटस्थता की घोषणा करें कि हम तटस्थ हैं यह भी श्रच्छी बात है। लेकिन

मैं कहना चाहता हूं कि इस तटस्थ शब्द का अर्थ क्या है । संस्कृत में तट कहते हैं किनारे को और तटस्थ का अर्थ है वह जो किनारे पर बैठा हो । अगर एक घास का सूखा तिनका जमुना के किनारे बैठा है और कहता है कि मैं तटस्थ हूं मेरा जमुना के प्रवाह से कोई अभिप्राय नहीं है, तो उसकी तटस्थता तभी तक की है जब तक कि जमुना में बाढ़ नहीं आती, बाढ़ आते ही उसकी तटस्थता वही चली जाएगी । हां अगर हिमालय की चट्टान कहे कि मैं तटस्थ हूं तो उसकी तटस्थता का कुछ अर्थ हो सकता है । इसी बात को महाकवि श्री दिनकर ने अपनी कविता की भाषा में इस प्रकार कहा है कि "क्षमा सोहती है भुजंग कि जिस के पास गरल है ।" जिस सांप के पास विष की पोटली सुरक्षित है उसके क्षमादान का कुछ अर्थ हो सकता है । हम शक्तिशाली हो कर ही दुनिया में शांति स्थापित कर सकते हैं, दुबल की शांति को दुनिया नहीं समझती ।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूं कि जब हम एटम बम न बनाने की घोषणा करते हैं तो हमें दूसरे प्रकार के आणविक हथियार बनाने से कौन रोकता है । हम एटमिक राइफिल या दूसरे हथियार बना सकते हैं, इस दिशा में हम प्रगति क्यों नहीं करते ।

दूसरी बात इस सम्बंध में यह कह दी जाती है कि हम इस विषय में घोषणा कर चुके हैं । वह घोषणा तो हमने उस समय की थी जब शत्रु राज्य ने अणुबम का निर्माण नहीं किया था । अब उसने अणुबम का विस्फोट कर दिया है तो नई परिस्थिति पैदा हो गयी है । इस नई परिस्थिति की छाया में बैठ कर हमें अपनी घोषणा के सम्बंध में फिर से विचार करना चाहिए । फिर से नया निर्णय लेना चाहिए ।

एक बात का हमको भय दिखाया जाता है कि अगर हम ने अणुबम बनाने का प्रयास किया तो हिन्दुस्तान का सारा बजट उसमें फंस जाएगा । और हिन्दुस्तान की अर्थ व्यवस्था असंतुलित हो जाएगी । एक चीज इस सम्बध में जो डा० भाभा ने कही उसके सम्बंध में एक माननीय सदस्य ने उन पर आरोप भी लगाया । मैं आज उसका स्पष्टीकरण करते हुए कहना चाहता हूं जिसका श्री माथुर ने भी स्पष्टीकरण दिया था । जब अणशक्ति के विकास के सम्बंध में संयुक्त राष्ट्र संघ का तीसरा सम्मेलन हुआ था तो उसमें संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधि ने कहा था कि दस किलो टन का एटम बम बनाने में साढ़े 17 लाख रुपया खर्च होगा और दो मैगाटन का बम बनाने में तीस लाख रुपया खर्च होगा । यह डा० भाभा की सम्मति नहीं है । कहा जाता है कि अमरीका हम से अणु विकास में बहुत आगे है इसलिए उसका खर्च कम आता है । लेकिन मेरा निवेदन है कि इस बम के लिए आवश्यक कच्चे सामान जैसे यूरेनियम आदि हमारे पास काफी हैं, इसलिए हमारा भी तो खर्चा कम हो सकता है । इस प्रकार अर्थ की बात यह कह कर इस को नहीं टाला जाना चाहिए ।

सबसे अन्त में मैं यह और कहना चाहता हूं कि हम कहते हैं कि दुनिया में शांति रहे, दुनिया में शांति रहे । इस सम्बंध में मुझे एक उदाहरण याद आ गया । पंच तंत्र में पंडित विष्णु शर्मा ने लिखा है कि एक विशेष पक्षी होता है जो रात को अपने पैर ऊपर करके सोता है । उससे किसी ने पूछा कि ऐसा क्यों करते हो तो उसने कहा कि यदि रात को आकाश गिर पड़े तो उससे मनुष्य जाति की रक्षा करने के लिए मैं ऐसा करता हूं, आसमान मेरे पैरों पर रुक जाएगा और मनुष्य बच जाएगें । इसी प्रकार की हमारी यह घोषणा है । मैं कहता हूं कि इस प्रकार की घोषणाएं करके अपनी दुर्बलता को मत छिपाइये और इस देश के भाग्य पर कृपा करके अणुबम बनाइए और इस देश को बचाइए ।

Shri Nambiar (Tiruchirapalli): Madam Chairman, I have got a sub-

[Shri Nambiar]

mission to make that if this Resolution is defeated by the House it will appear as if we are not at all interested in producing atom bombs. On the other hand, if it is passed, we are not in a position to produce even one bomb today. Therefore, I would rather request the hon. Mover of the Resolution not to press it. That is my first submission.

Coming to the point of our capacity to produce it and our desire to have it, I am not a puritan. If we can have a nuclear bomb, I would like to have it for the purpose of defence of the country. Because, after all, if other countries are producing it, what is the harm in our country producing it? If it is bad for them, then it is bad for us. But, we are not in a position to produce one now. That is my humble feeling. The question of emotions, the question of our desire, the question of other political considerations with regard to our past commitments need not be given much stress here. If in the past we have said that we are against producing atom bomb, we can change it if we find it necessary.

But if the production of atom bomb by China is the reason for our producing it, then China will also be justified in producing it. Because, the argument of China in justification of the production of atom bomb is that its enemy, namely, America, has produced it. Therefore, if we feel that we are enemies of China and we start producing it merely because China has produced it, how can we condemn China for producing it for the same reasons? Therefore, if we produce atom bomb, in the same breath we cannot condemn China. If we are producing it because China is producing it and other countries are producing it. So, the political justification of non-production on the ground of the Moscow Test Ban Treaty does not hold water.

Coming to the point of our capacity to produce an atom bomb, I had occasion to visit the Trombay reactor and I found that what we are actually producing in our country as a few kilograms of plutonium. If we start producing atom bomb with the few kilograms of plutonium that we are today producing in Trombay, we can produce two atom bombs of the smallest type ever produced in any part of the world. That is all that is possible. We do not know whether Canada with whom we entered into an agreement would permit us to utilise that plutonium for the purpose of making an atom bomb.

Coming to the question of uranium 235 for a nuclear device, that is far, far ahead of our thinking because we are unable to do so. We may know the formula. We may think of producing an atom bomb or a hydrogen bomb in a test tube today. That is all the stage we have grown up to by industrial and other means. After all, it is a quetsion of our capacity. The production of a uranium 235 nuclear device of the type that the Chinese exploded the other day requires crores and crores of rupees of investment and labour of so many years of industrial growth. Could we do that today considering that we can complete all our Five Year Plans and find enough food? Even for food today we are importing so much from abroad by paying hard-earned foreign exchange and are incurring debts. In this economic background will our venturing into the production of a nuclear bomb add to our strength?

The other day one of the hon. Members speaking from the other side said that the very purpose of explosion of a nuclear device by China was to terrorise India thereby persuade India also to produce one and upset its economy thereby creating confusion inside the country so that some anti-social elements could create a revolutionary situation and upset the Government. It was pointed out in a very surreptitious manner

that somebody here was waiting for confusion to be created so that they could upturn the economic and social set-up in the country. That was the insinuation and I even protested against that. There is no question of somebody waiting for an opportunity of failure of the equilibrium of the economic and social growth that is going on in the country.

We are already in a very bad economic condition. Every hon. Member of the House knows it. What is the use of our keeping it a secret? Our capacity today is so low that we are unable to think even of feeding our own people. Yesterday we saw what is happening in Kerala and the amount of ration that is being given there. Let us not forget all these things. Let us be realistic; let us not be idealistic or ambitious. I want a calm consideration of the question.

After five or ten years when our industry grows and we are capable of producing nuclear weapons with uranium 235, or something better than that, let us produce it if we find it necessary then. If somebody is going to throw one on us, there is no harm in our putting one on the other man's head as a matter of principle. I am not a puritan; I am not a satyagrahi; I am not a Gandhian; I am not a non-violent man of that type. But I do not think that anybody is planning to put an atom bomb on our head. That is my submission.

श्री क० ना० तिवारी (बगहा) : सभापति महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं । माननीय सदस्य, श्री नम्बियार, ने जो कुछ कहा है, वह वह बात तो समझ में आती है, क्योंकि वह एक ऐसे दल से सम्बन्धित हैं, जिसका सम्बन्ध विदेशों से है । लेकिन माननीय सदस्य, श्री खाडिलकर, ने जो कहा, वह बात समझ में नहीं आई ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : वह भी उधर झुकते जा रहे हैं ।

श्री क० ना० तिवारी : डा० एच० जे० भाभा ने 24 अक्तूबर, 1964 को युनाइटिड नेशन्ज डे के दिन आलइण्डिया रेडियो से जो ब्राडकास्ट किया, मैं उसको क्वोट करना चाहता हूं । उन्होंने कहा :

"Let me say straightaway that in the opinion of many who have devoted much time and study to the problem, nuclear disarmament cannot be separated entirely from general disarmament. Even if it were possible to achieve complete nuclear disarmament while leaving conventional armament untouched, we would only be returning to a world as it existed before 1945, and we know that that world was not free from the horrors of war on a mounting scale."

आगे वह कहते हैं :—

"There appears to be no means of totally intercepting such an attack, and if even a small fraction of it gets through, entire cities and regions may be totally devastated. The only defence against such an attack appears to be a capability and threat of retaliation.".

इसके आगे उन्होंने कहा है :—

"In short, atomic weapons give a State possessing them in adequate numbers a deterrent power against attack from a much stronger State. Indeed, the importance of nuclear weapons is that they enable a country possessing them in adequate measure to deter another country also possessing them from using them against it.

Nuclear power stations with an electrical output of 200, 250 and 300 megawatts per reactor are under construction in the world today, and much larger sizes are

[श्री क० ना० तिवारी]

being planned. Atomic power stations automatically generate plutonium in their fuel, and a 300 megawatt electrical power station would provide enough plutonium for the production of between 20 to 35 atomic bombs a year, depending on their size. Thus, it seems quite within the capacity of a number of countries to produce nuclear weapons in this measure within the next five to ten years. A considerable misconception exists about the cost of doing so."

आज यह जो कहा जा रहा है कि एटम बम बनाने पर सारे का सारा बजट खत्म हो जायेगा और जैसे केरल के लोग भूखे मर रहे हैं, बाकी लोग भी भूखे मरेंगे, यह बात किसी एक्सपर्ट की नहीं है । डा० भाभा एक एक्सपट हैं, जिन का सम्बन्ध न्युक्लियर साइंस से है ।

इसके बाद वह कहते हैं कि इस वक्त आरमामेन्टस पर हम जो खर्च कर रहे हैं, एटम बम बनाने पर उससे कम खर्च होगा । मैं उनके शब्दों को सुनाना चाहता हूं :—

"At the Third International Conference on the Peaceful Uses of Atomic Energy organised by the United Nations in Geneva in September this year, there was a paper by the United States on the peaceful uses of atomic explosions for excavation for water diversion, irrigation or flood control, for construction of canals and harbours, or for blasting passages through mountains for highways and railroads, and for several other peaceful uses. In that paper the cost of nuclear explosives was given. A 10 kilton explosion, *i.e.* one equivalent to 10,000 tons of TNT, would cost $ 350,000 or Rs. 17·5 lakhs—that is an explosion of the same order of magnitude as the Hiroshima bomb—while a two megaton explosion, *i.e.* one equivalent to 2 million tons of TNT, would cost $ 600,000 or Rs. 30 lakhs. On the other hand, at current prices of TNT, 2 million tons of it would cost some Rs. 150 crores, making the use of that much explosive in one event totally impossible."

अन्त में मैं उनको क्वोट करना चाहता हूं :—

"This shows that atomic explosives are some 20 times cheaper and thermo-nuclear explosives more than 500 times cheaper than conventional explosives. Thus, on the basis of the figures given in the paper I have quoted, a stockpile of some 50 atomic bombs would cost under Rs. 10 crores and a stockpile of 50 two-megaton hydrogen bombs something of the order of Rs. 15 crores. These expenditures are small compared with the military budgets of many countries. We may, therefore, well have to reckon with a number of countries possessing nuclear weapons within the next five or ten years, unless some important and tangible steps are taken towards disarmament."

"The explosion of a nuclear device by China is a signal that there is no time to be lost. Neither the United Nations nor the great powers have yet succeeded in creating a climate favourable to countries which have the capability of making atomic weapons, but have voluntarily refrained from doing so........".

ये विचार उस व्यक्ति के हैं, जिसका सम्बन्ध न्युक्लियर साइंस से है । कास्ट के सम्बन्ध में जो दलील दी जाती है, जिसकी चर्चा श्री कृष्ण मेनन, श्री नम्बियार और श्री खाडिलकर आदि ने की, ये विचार उसका जवाब हैं । इस का जवाब वहां है और वह चीपर पड़ता है ।

जब से चीन ने अणु बम फोड़ा है तब से हमारे जितने पड़ौसी देश हैं, नेपाल है, भूटान है, सिक्किम है, बर्मा है, सीलोन है या और दूसरे छोटे अफ्रीका के देश हैं, उनके अन्दर उसका प्रभाव ज्यादा बढ़ गया है। हमने जो शिकस्त खाई है, उसके बाद से जो हमारी कमजोरी प्रकट हुई है, उसको हमें दूर करना है। अगर हमारे पास यह नहीं रहा तो हमारा साथ देने वाला कोई नहीं रहेगा। कमजोर का साथ कोई नहीं देता है। हमारे यहां एक कहावत है, "जोरू जमीन ज़ोर की।" जिसके पास जोर होता है उसी के पास ये दोनों चीजें रहती हैं। एक और भी कहावत है "वीर भोग्या वसुन्धरा।" कमजोर के लिए यह दुनिया नहीं है। कोई कमजोर आदमी या कोई कमजोर नेशन दुनिया में जी नहीं सकती है।

यहां पर हिंसा और अहिंसा की बात भी कही गई है। गांधीजी के जीवन में राम का स्थान सबसे ऊंचा था। राम ने भी कहा है :

लक्ष्मण बाण सराहिये,
बिन भय होय न प्रीत।

इसलिए ताकत जरूरी है। मेरे ख्याल में अगर हिन्दुस्तान को दुनिया के अन्दर जीना है और इन राष्ट्रों को अपने साथ रखना है तो अणु बम अवश्य बनाना चाहिये।

Mr. Chairman: May I know how much time the hon. Minister wants for his reply?

Shri Hathi: About ten to fifteen minutes.

Shri Kapur Singh: Madam Chairman, My party's stand on this subject of manufacture of nuclear weapons has been set forth in this House by Shri M. R. Masani.

Shri Shinkre (Marmagoa): But it was based on wrong facts or incorrect facts as shown by the hon. Member who preceded him. What has the hon. Member to say about the facts placed before the House by Shri K. N. Tiwary?

Shri Kapur Singh: The question which Shri M. R. Masani has expressed in this House has been arrived at after a great deal of deliberation and after a great deal of anxious concern.

Shri Bade (Khargone): The hon. Member's opinion should not be 'His Master's Voice'.

Shri Kapur Singh: My party's stand consists of three simple propositions which Shri M. R. Masani had enunciated.

Shri H. N. Mukerjee (Calcutta Central): The hon. Member might state them.

Shri Kapur Singh: These propositions are that the nuclear device which the Chinese have now exploded is a matter of grave concern for this country, and that consistent with our developmental plans and our economic capabilities, it is not possible for us to enter the nuclear weapons race. In these circumstances it was suggested that we must try to get protection against the menace which China poses against us. It was surmised that this protection could come either from the USSR or from the USA or from both. If we can get protection from both, it is a very good thing. But if we can get protection only from one side, then also we should try to have it.

Shri M. R. Masani also went on to say that it was extremely unlikely that we shall get such an umbrella protection from the U.S.S.R. and that, therefore, the only course open to us was to accept the umbrella protection which had been voluntarily and *suo motu* offered by the U.S.A. But I wish to go a step further. In amplification of this stand which Shri M. R. Masani has taken here, in my own personal capacity, I would go so far as to say that in case we come to the conclusion either that such a protection is not forthcoming or that in the national interests it is not desirable

[Shri Kapur Singh]

to get this umbrella protection either from the U.S.S.R. or from the U.S.A., then we must not sit silent but must take some action.

It has been suggested that we need not necessarily go in for the manufacture of a nuclear bomb and that other courses are also open to us. Three or four courses have been suggested here on the floor of the House and also by authoritative statements outside this House. It has been suggested that we should try to get the nuclear weapons altogether banned in the whole world. It has been suggested that we should try to help those who are endeavouring to have the possession of nuclear weapons contained so that their proliferation is stopped. It has also been suggested just now by an hon. Member that China should be exposed to the civilising influences of the UNO and then she will no longer pose a threat to India. Finally, it has been suggested more than once, here as well as outside that our ultimate and real protection lies in trying to help establish universal peace on this earth.

I wish to say that all these solutions are solutions which do not accord with what is known as *realpolitik*; this is not a very sensible posture on the part of a person who is possessed of realistic manliness but of a person who is a neuter gender, a eunuch, or of one who lives in a paradise not of wisemen and that this is not a position into which we can let our great country slip.

Then what shall we do? This manufacturing of the N-bomb is not merely a matter of defence against the menace which China has now posed against us, it has more than one implication, and all those implications have to be taken into account before we come to a final conclusion. The N-bomb has a moral aspect. It has the aspect of moral prestige. Those who possess it stand as if they are a class apart, a superior class. That gives them moral prestige which we lose if we do not possess the N-bomb. It has also the implication of our advance in general nuclear technology. If we do not keep pace with advancements in nuclear technology, we do not only buffer in the matter of defence but we also lose in general scientific progress. Thirdly, considerations of sheer national defence necessitate our not leaving the matter of nuclear bomb merely to considerations of general dreaming and idealistic stances.

Therefore, I would say that the lesson of the whole History is against the assumption that once a weapon has been discovered, it can either be contained or its use can be stopped for ever. Those who read history know that whenever there has been an advancement in the science of weaponry or armoury, there have always been people who declared that it was morally obnoxious and it should not be used. I am quite sure when the bow was invented or iron was discovered as opposed to bronze or when gunpowder was discovered, there was such an outcry and there were idealistic people who thought and wished that they should be contained or banned. But we learn that it has never been possible. Therefore, to hope that nuclear weapons, once they have been invented will ever be contained or not used is a dream on which India should not depend.

In these circumstances, my suggestion is that if we decide not to accept the 'umbrella', we should, even if we have to go with one meal a day, have our own nuclear weapons and should have our own nuclear technological researches and advancement, for slavery is always worse than hunger.

श्री यशपाल सिंह (कैराना): अधिष्ठात्री महोदया, मैं . . .

सभापति महोदय : मेरी माननीय सदस्यों से प्रार्थना है कि पांच मिनट में समाप्त कर दिया करें ।

श्री यशपाल सिंह : माननीय श्री हुकम चन्द कछवाय को हार्दिक मुबारिकबाद पेश करता हूं कि उन्होंने इस सदन के सामने इस वक्त सबसे ज्यादा जरूरी रेजोल्यूशन पेश किया है । कांग्रेस सरकार का सबसे बड़ा अपराध यह है कि इसने भारत की विजेता जाति को पराजित जाति लिखवा दिया है, इंडियन नेशन जो संसार भर में फतह मानी जाती थी, जिसकी संसार भर के अन्दर धाक थी, जिसके जवानों की आवाज़ को सुन कर शेर भी झाड़ियों में छिप जाया करते थे, उसको डिफीटिड नेशन लिखवा दिया है । यह कांग्रेस सरकार का सबसे बड़ा पाप है । यह इनकी ही करतूत है कि गीदड़ के हाथ से शेर की मौत हुई है । अगर इस कलंक को धोना है तो मैं चाहता हूं कि यह जो एक झूठा इलजाम हमारे ऊपर आ गया है, इसे अलग किया जाए और दुनिया के सामने हम सुरखुरू होकर खड़े हों । इसका एक ही इलाज है और वह वही है जो हमारे साथी श्री हुकम चन्द कछवाय ने हमारे सामने पेश किया है । बगैर एटमिक पावर के आज हम लोग दुनिया में खड़े नहीं रह सकते । यह बात सोचने की जरूरत नहीं है कि खर्च कितना होगा । खर्च के कोई मानी नहीं है । उन्होंने शुरू से ऐसी बुनियाद डाली है कि हिन्दुस्तान के क्षात्र सम्मान को भुला दिया । जिस वक्त यह ट्रेनिंग देने की जरूरत थी कि :

संभावितस्य चाकीर्ति मरणादतिरिच्यते

जल्लत की जिन्दगी से मौत अच्छी है. उस वक्त कांग्रेस सरकार न इस बात का डर दिखाया कि अगर एक एटम बम गिर गया तो 44 करोड़ इन्सान खत्म हो जाएंगे । मैं कहता हूं कि क्यों खत्म न हों । हम पराजय की और जिल्लत की जिन्दगी नहीं जीना चाहते । जिल्लत में रह कर जीने का हमको कोई अधिकार नहीं है । आज सबसे बड़ी जरूरत यह है कि यह बहाने बाजी न की जाए कि देश कमजोर है, देश गरीब है, देश निर्धन है । देश निर्धन नहीं है । इसी हाउस में हमारे माननीय वित्त मन्त्री जी ने बताया था कि हमारा 900 करोड़ रुपया पाकिस्तान की तरफ वाजिब है तो पाकिस्तान नहीं दे रहा है । अगर सरकार इतनी पंगु हो गयी है, इतनी नपुन्सक हो गयी है कि उसको वापस नहीं ले सकती, तो फीरोजपुर के सिखों को हुक्म देकर देखे, वे दो दिन में उसको वसूल करके दिखा देंगे । अगर सरकार इस 900 करोड़ रुपए को पाकिस्तान से वापस नहीं ले सकती तो जोधपुर के राजपूतों को हुक्म दे, वे 24 घंटे में उसको वापस दिला सकते हैं ।

आज जरूरत इस बात की थी कि हमको इस तरह की ट्रेनिंग दी जाती कि :

दुष्कंटकों से पूर्ण वृक्षों के शिखर पर वास हो ।
खाने पड़ें पत्ते मगर ना दासता का त्रास हो ।।

जरूरत तो इस बात की थी, लेकिन हिन्दुस्तान को पीछे खींचा जा रहा है । आज अगर हम अपनी पराजय को विजय में बदलना चाहते हैं, और दुनिया में अपनी फतेहयाबी के परचम को लगाना चाहते हैं, तो एक ही उपाय है कि हमारे पास एटम बम से लगा कर सब तरह के छोटे बड़े हथियार हों पूरी युद्ध सज्जा हमारे पास हो । हमारे पास युद्ध का पूरा सामान हो । हमारा धर्म शास्त्र इस बात को कहता है, हमारी गीता माता इस बात को कहती है कि संसार में वही भाग्यशाली है जिसको धर्म-युद्ध में लड़ने का और मरने का मौका मिले । गीता का सबसे बड़ा उपदेश यह है :

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्ध मीदृशम् ।

खुश किस्मत हैं वे लोग जो धर्मयुद्ध में आते हैं ।

अगर सरकार को अपने सिर से यह कलंक धोना है तो पंचशील के नारे को वापस ले । जिस दिन पंचशील का नारा लगाया गया

[श्री यशपाल सिंह]

था, जिस दिन इस पर दस्तखत हुए थे उस दिन मैंने कहा था और पार्लियामेंट में भी मैंने अर्ज किया था शक्ति तलवार में है, शक्ति शस्त्र में है, शक्ति अणुबम में है, शक्ति हाइड्रोजन बम में है। उस वक्त भी मैंने कहा था :

हंसी तलवार की हम लोग उड़ाएं न कभी।
इसकी अज़मत की शहादत गुरु गोविन्द ने दी।।
इसके साए में है जन्नत ये हैं फर्माने रसूल।
हक की नुसरत के लि तेग़ अली की चमकी।

और मैंने उस वक्त यह भी कहा था :

पंचशील और अहिंसा के बयावानों में,
कौम भटकी हुई प्यासी कहीं दम तोड़ न दे।

पंचशील की भूल भुलैया में कौम की बहादुरी को मिटाया गया, तेज को मिटाया गया। मेरा अनुरोध है कि माननीय श्री हुकम चन्द कछवाय ने जो रिजोल्यूशन दिया है उसको मंजूर किया जाए और उस पर अमल किया जाए। रुपए की देश में कमी नहीं है, जो रुपया आज शराब और ऐयाशी में, नाच और गाने में खर्च किया जा रहा है उसको रोका जाए और उसको युद्ध सज्जा में लगाया जाए, उसको ऊंचे से ऊंचे एटम बम बनाने में खर्च किया जाए।

Shri C. K. Bhattacharyya (Raiganj): This is a matter on which it is difficult to be dogmatic. When Members speak on both sides, there appears to be reason in both of them, excepting Shri Khadilkar who argues very admirably, but comes to a wrong conclusion.

Shri N. C. Chatterjee (Burdwan): Always.

Shri C. K. Bhattacharyya: He argued against our possessing the atom bomb, but admitted that China had succeeded in blasting her way to civilised society through the atom bomb. Both the propositions were stated by him at the same time.

Shri Bade: He was speaking of the China lobby.

Shri C. K. Bhattacharyya: There is some reason in Shri Prakash Vir Shastri's words, but I would like to tell him that the atom bomb is a different weapon, not a usual one. When the first atom bomb was burst in Japan, the father of the atom bomb, Prof. Oppenheimer, was asked what he thought of it, and he quoted a line from Gita:

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो ।
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।

He said that he felt that He was destruction itself, that He had come to destroy the world with His own creation. What I feel is that we have been taken off our feet by the Chinese blast. When the United States or the Soviet Union had this blast, we did not feel urged, but as soon as the Chinese blast had come, we are actuated by some sort of psychological problem and we think that unless we have the atom bomb also, it is not good living on the earth. It is a psychological problem.

I had read a statement from a retired military officer, appearing in one of the American magazines which said like this: "We ourselves in America and they in Russia are taking pride on the fact that we are manufacturing the atom bombs. The fact of the matter is that there are two groups of Germans in both the places and it is they who are manufacturing atom bombs. I do not know who are manufacturing the atom bombs in China. It may be themselves or they may have had some help from Russia also. We should not be taken off our feet at the blast of the Chinese bomb.

Lastly, I make one submission. I am not a prophet but my instincts tell me that the atom bomb has been used in human history only once and it will never be used in human history or civilisation for the second time.

Mr. Chairman: Hon. Members should take five minutes only. Mr. Mukerjee.

Shri H. N. Mukerjee: Madam Chairman, I am rather disturbed by the tone of the debate and also by the fact that this motion has actually been put forward. A little while ago, on Shri Hathi's request the House adjourned discussion on certain matters relating to Goa because it was supposed to be rather delicate and difficult. Now, we are discussing a resolution which calls upon the Government of India to manufacture nuclear weapons. I would advise the Mover of the resolution to remember that perhaps if he really meant it, he should not have been talking about it so much. One does not go on passing resolutions in Parliament about the manufacture of atomic bomb. But one does it if one wishes to do so. I was, therefore, rather struck by the irresponsibility of the proceedings. I was further struck—I am sorry to have to say—by the irresponsibility of the utterences of some of the hon. Members of this House. This is a matter on which we should not make very easy and glib formulations about courage and about misplaced idealism and that sort of thing. The atomic bomb or the nuclear weapon is not a kind of a toy which we just acquire because some others have got it. This country has known a fair deal about nuclear science and we have declared that our interest in nuclear science is in the utilisation of nuclear knowledge for the good of mankind and we have made it clear that we on our part are never going to enter into a competition in evil by the possession of the nuclear bomb.

We have been told that since China has got it, perhaps it is necessary that we should have it. I do not know why Members of Parliament forget that nuclear weapon is not a weapon of defence at all. It is a weapon of offence, the most atrocious kind of sheer, destructive weapon. It is not a weapon which any country can have for purposes of self-defence. It is a weapon that certain very powerful countries have today because they want to deter other countries from making use of it. This is a competition, therefore, in which only certain kinds of countries can enter. As far as we are concerned, we know that we are not going to enter this competition. We have made our decision in spite of our hon. friend Shri Nambiar whom I do not quite understand. I do not share his idea that in regard to this we have an open mind. I do not agree with that at all. We have made our position very clear. This country's policy is that this country fights in order to bring about a world without war. It may be an idealistic one as Shri Kapur Singh suggested. He was suggesting that every time an instrument of war was invented, like gunpowder, the idealists must have shouted against it. Of course they did shout against it. It is a good job that idealists shouted against it. But today, we live in a time of history when we can conceivably achieve a world where war has been eliminated. It may be talking sentimentality; some people might imagine it. But it is not. It is real politics in the first class sense of that term.

Mr. Chairman: The hon. Member's time is up.

Shri H. N. Mukerjee: I shall finish in a couple of minutes. Nuclear weapons are doing a lot of damage, corrupting the atmosphere and condemning generations yet unborn, God knows, what kind of physical and psychological infirmities. And there is no scope for courage, about which my hon. friend Shri Yashpal Singh talks so eloquently, in nuclear warfare. Hiroshima and Nagasaki where the nuclear bombs were dropped, were the last word in the lack of all courage. Courage goes right out of nuclear war; at one time, war did have a romantic aspect, and as far as our jawans are concerned, they possess that faculty in plenty to show all

[Shri H. N. Mukerjee]

the courage in the world. But as far as nuclear warfare is concerned, courage has nothing whatever to do with it. We have, therefore, decided for practical reasons, for moral reasons, for all conceivable reasons combined, that we are not going to enter this race. It would do no good either to us or to others.

There is already a test ban treaty which is not complete. The defects have to be rectified; the stockpiles of atomic bombs have to be destroyed; nuclear knowledge has to be turned to peace. That is the perspective with which we have to proceed. This is the only practicable way in which we can proceed. This is the only moral path which India has deliberately chosen and nothing has happened which makes us today like the follow China and have an atom bomb of our own.

I have been told that moral prestige attaches to the possession of nuclear weapons. I would say, to be an international bully is not the same thing as to be in possession of moral prestige. As a matter of fact, these big powers,—the United States, the USSR, United Kingdom and so on and so forth—always have to be apologetic about their possession of nuclear weapons. They have to say that they have no intention of using these nuclear weapons. And therefore no particular moral prestige attaches to the possession of nuclear weapons.

16.43 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

On the contrary, everybody knows that we have the wherewithal, if you want to do it, to manufacture nuclear weapons of our own, but we have chosen not to do so, because we know that by means of pursuing our policy of peace and non-alignment, we shall be instrumental in as much measure as is open to us, to bring about, if we possibly can, a world without war.

All this talk about courage and sentimentality and idealism seems to be out of place. Some Members have quoted the Gita but they forget that in our scriptures it was stated a long time ago:

एकेन ब्रह्मदंडेन सर्वास्त्रानि हतानि मे

All the weapons of the world can be defeated by one weapon which has got the strength of the spirit behind us; that is the weapon of peace. That is the weapon and the kind of foreign policy which, at its best, was formulated by our former Prime Minister and it can be implemented properly. That is the perspective which I hope the Prime Minister continues to have in view, and that is why I believe that this is a very irresponsible thing—to have to discuss this kind of resolution in Parliament.

I do wish the Member concerned can be persuaded to withdraw this resolution and in any case I do wish that Government reiterates the position which is, as already stated before the world ,namely, that while we are in a position to manufacture our own atomic weapons, if we wish to do so, we do not intend to do so. We intend to pursue our policy of peace and thereby achieve the objectives to which our policy is committed.

श्री बड़े : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अणु बम के विषय में जो चर्चा हुई है, उस में दो दृष्टिकोण मुझे बड़े आश्चर्यजनक मालूम ए हैं । एक तो यह है कि चाइना के विदेश मंत्री ने यह कहा था कि हम ने हिन्दुस्तान को दृष्टि में रख कर अणु बम का विस्फोट नहीं किया है, बल्कि विश्व की परिस्थितियों को ध्यान में रख कर यह विस्फोट किया है । मुझे देख कर आश्चर्य होता है कि आज वही आवाज हमारे मित्र, श्री खाडिलकर उठा रहे हैं । इसीलिए कभी कभी उन पर दोषारोपण किया जाता है कि वह चाइना लाबी को प्रोटेक्ट करते हैं । यह बात सच नहीं होगी, लेकिन उन की बातों से इसी

प्रकार का सन्देह किया जा सकता है, क्योंकि जो बात चाइना के विदेश मंत्री ने कही थी, वही वह भी कह रहे हैं। चाइना ने यह विस्फोट हमारे देश के समीप ही किया है। मैं पूछना चाहता हूं कि अगर उसने यह विस्फोट हमें दृष्टि में रख कर नहीं किया है, तो फिर किस लिए किया है।

माननीय सदस्य, श्री मुकर्जी ने, "एकेन ब्रह्मदंडेन सर्वास्त्रानि हतानि मे" की चर्चा की है। उस का अर्थ यह है कि अपने पास ब्रह्मास्त्र होने से विश्व अपने वश में आता है। लेकिन उन्होंने इन शब्दों के अर्थ को बदल कर बताया है। ब्रह्मास्त्र को ब्रह्मदंड कहते हैं और आज का ब्रह्मास्त्र अणुबम ही है।

इस सम्बन्ध में डिस-आर्मामेंट, मास्को टेस्ट-बेन ट्रीटी और कई नैतिक सिद्धान्तों का हवाला भी दिया गया है। लेकिन मैं निवेदन करना चाहता हूं कि नीति नीति के लिए नहीं होती है और न ही देश नीति के लिए होता है, बल्कि नीति देश के लिए होती है। जहां तक डिस-आर्मामेंट का सम्बन्ध है, डा० भाभा ने कहा है :—

> "I have been asked to speak on nuclear disarmament. Let me say straightaway that in the opinion of many who have devoted much time and study to the problem, nuclear disarmament cannot be separated entirely from general disarmament. Even if it were possible to achieve complete nuclear disarmament while leaving conventional armament untouched, we would only be returning to a world as it existed before 1945, and we know that that world was not free from the horrors of war on a mounting scale."

अणु बम बनाने के विरोध में जो कुछ कहा गया है, उस का तात्पर्य यह है कि हम को केवल न्युक्लियर डिस-आर्मामेंट करने को कहा जा रहा है, जब कि डा० भाभा के अनुसार कन्वेन्शनल आर्मामेंट्स पर प्रतिबन्ध लगाये बिना उसका कोई लाभ नहीं है। जहां तक कन्वेन्शनल वैपन्ज का प्रश्न है, हम रूस से मिग विमान मंगा रहे हैं, अमरीका से शस्त्र मंगा रहे हैं। जब हम साधारण अस्त्र ले रहे हैं, तो फिर महास्त्र लेने में क्या आपत्ति है? और फिर केवल इस देश के वह महास्त्र लेने में क्या आपत्ति है?

यह भी कहा जाता है कि संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए हम को न्युक्लियर वैपन्ज नहीं बनाने चाहिए। शान्ति बनाये रखने में वही देश समर्थ है, जिस के पास शक्ति है। एक कमजोर राष्ट्र का शान्ति बनाये रखने की बात कहना उसी प्रकार है, जिस प्रकार कोई कमजोर आदमी कहे कि मैं मार खा लेता हूं लेकिन कुछ करता नहीं हूं और इस प्रकार शान्ति बनाये रखने में मदद दे रहा हूं।

माननीय सदस्य, श्री खाडिलकर, ने कहा है कि हम को पंडित जी के चाक आउट किये हुए प्रोग्राम से बाहर नहीं जाना चाहिए, क्योंकि पंडित जी आर्किटेक्ट आफ़ फ़ारेन पालिसी थे। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि श्री खाडिलकर को भी मालूम है कि जब चाइना ने आक्रमण किया था, तो यहां पर ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ़ को बुलाया गया, अमरीका के लोग यहां आ गये और उन सब की मदद ली गई। पंडित जी ने उस समय कहा था कि नान-एलाइनमेंट हम को अपनी रक्षा के लिए किसी से सहायता लेने में रुकावट नहीं है, हम अपने देश की सुरक्षा के लिए कहीं से भी मदद ले सकते हैं। पंडित जी बड़े विद्वान थे, वह पक्के पालिटीशन थे और उन को सारी स्थिति का ज्ञान था। पालिटीशन मुंह से जो भी बात कहे, लेकिन अपने देश के हित और सुरक्षा के लिए वह एक नीति को छोड़ कर दूसरी नीति अपनाने में झिझकता नहीं है। इस लिए मैं समझता

[श्री बड़े]

हूं कि इस सम्बन्ध में पंडित जी और गांधी जी की आड़ लेना ठीक नहीं है। प्राइम मिनिस्टर ने उस रोज कहा कि आगे चल कर हमारी नीति बदलेगी।

श्री मुकर्जी ने कहा है कि एटम बम से डिफ़ेंस नहीं होता है, यह एटेक का शस्त्र है। इस बारे में डा० भाभा कहते हैं :

"In short, atomic weapons give a State possessing them in adequate numbers a deterrent power against attack from a much stronger State. Indeed, the importance of nuclear weapons is that they enable a country possessing them in adequate measure to deter another country also possessing them from using them against it."

डिटरेंट पावर तो है।

यह कहा जाता है कि हमारे पास पैसा नहीं है। डा० भाभा ने कहा है कि आप शस्त्रों में जो पैसा खर्च करते हैं, उसको न करके अगर इस में आप खर्च करें तो आपका खर्चा कम हो जाएगा। डा० भाभा ने सत्तरह लाख रुपये की बात कही है। हमारे शास्त्री जी तो शास्त्री जी हैं, पंडित हैं और इस चीज़ को भाभा साहब ही बता सकते हैं, आप नहीं बता सकते हैं। उनकी जब स्टेटमेंट है तो आप कुछ भी कहें उसको कौन मानेगा। अपने देश की सुरक्षा का खयाल करते हुए अगर खर्चा ज्यादा भी आएगा तो पार्लिमेंट एक आवाज़ से उसको करने के लिए भी तैयार है। मैं प्रधान मंत्री जी को विश्वास दिलाता हूं कि हम नंगे और भूखे रह कर भी न्यूकिलयर बम बनाने के लिए तैयार हैं और आपको देश की रक्षा के लिए जितना पैसा चाहिये हम देने के लिए तैयार हैं और देंगे। आर्थिक बात आप न करें, नैतिक बात न करें। यह कहते हैं कि हम अभी एटम बम नहीं बनायेंगे। क्यों नहीं बनायेंगे इसका कारण ये जानें या परमात्मा जाने की इनके अन्तः-करण में क्या है। हमारे देश पर एक बार संकट आ चुका है। अब चीन के पास एटम बम भी है। इसके बावजूद भी जो आर्थिक बात कही जाती है, उसके कोई मानी नहीं रह जाते हैं। वह अब नहीं कही जानी चाहिये। आपने बजट में अनेक टैक्स लगाये थे और लोगों ने खुशी खुशी उन टैक्सों को अदा किया था। भाभा साहब का स्टेटमेंट है कि हीरोशिमा में जो बम गिराया गया था वह सत्तरह लाख में तैयार हुआ था और उतने में वह तयार हो सकता है। ऐसी स्टेटमेंट भी हमारे पास है कि तीस लाख में एटम बम तैयार हो सकता है। यह स्टेटमेंट पार्लिमेंट के मेम्बर के पास है। तब आप कैसे कह सकते हैं कि करोड़ों रुपया इसके बनाने पर खर्च आयेगा।

आखिरी बात कह कर मैं समाप्त करता हूं। हमारे देश पर बाहरी आक्रमण का खतरा बना हुआ है। खतरा सिर पर जब पड़ जायेगा तब कुआं खोदने से कोई लाभ नहीं होगा। तब आप भी डूबेंगे और यजमान को भी साथ ले डूबेंगे। इस वास्ते बेहतर यही है कि अभी से हम संम्भल जायें और सुरक्षा की पूरी तैयारियां कर लें।

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : उपाध्यक्ष महोदय, डा० भाभा के बयान के बारे में यहां अकसर चर्चा हुई है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उनके वक्तव्य को, उनके बयान को गौर से माननीय सदस्य पढ़ें। उनके बयान में जोर इस बात पर दिया गया है कि न्यूक्लियर वैपंज़ का इस्तेमाल दुनियां में न किया जाए। न्यूक्लियर वैपंज़, खतरनाक हैं, भयानक हैं, दुनिया को क्षति पहुंचाने वाले हैं। दुनिया को बरबाद करने वाले हैं, दुनिया को नुकसान पहुंचाने वाले हैं। उनके सारे वक्तव्य से यही ध्वनित होता है, यही नतीजा निकलता है, इसी परिणाम पर पहुंचा

जा सकता है कि न्यूक्लियर डिवाइसिस डैस्ट्रक्टिव परपज़िज़ के लिए, नाशवादी कामों के लिए इस्तेमाल नहीं होने चाहियें। मैं कुछ भी सिद्धान्त या आदर्श की बात नहीं कह रहा हूं। डा० भाभा का यह कहना जरूर है कि न्यूक्लियर डिवाइसिस को जितना हम बढ़ा सकें, बढ़ाये, जितना उसका डिवेलेपमेंट, जितना उसका विकास कर सकें, करें ताकि उसका हम पीसफुल परपज़िज़ के लिए, शान्ति के कामों के लिए इस्तेमाल कर सकें।

मिसाल के लिए जिस तरह से आज इलैक्ट्रिसिटी का इस्तेमाल हम विकास के लिए, इंडस्ट्री के लिए, कारखानों के लिए करते हैं, उसी बिजली का इस्तेमाल डस्ट्रक्टिव कामों के लिए भी किया जाता है। मान लीजिये हम एक एक्सप्लोशन करते हैं, भारी भारी आज हमें टनल्ज़ बनानी हैं, बहुत बड़ा एरिया मान लीजिये हमें साफ करना है, पहाड़ों को तोड़ना है, डिवेलेपमेंट वर्क के लिए हमें उसका इस्तेमाल करना है और उसके लिए अगर हम न्यूक्लियर डिवाइसिस की शक्ति को बढ़ायेंगे तो उससे देश को भी लाभ होगा, दुनिया को भी लाभ होगा। आज एटोमिक एनर्जी कमिशन हमारा उस काम को कर रहा है, उस तरफ उसका डिवेलेपमेंट और विकास बढ़ता जाता है।

यह ठीक है कि जिस शक्ति का आप कंस्ट्रक्टिव कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं उस शक्ति का आप चाहें तो डैस्ट्रक्टिव कामों के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। यह तो हर एक में है, उस में भी सम्भव है। मेरा निवेदन है कि भाभा साहब के बयान को आप पढ़ेंगे,—उनकी पूरी जो बात है उसको देखेंगे, तो आप इसी नतीजे पर आसानी से पहुंच जायेंगे।

दूसरी बात उन्होंने बहुत साफ कही थी कि जो अंदाजा उस में दिया है वह युनाइटेड स्टेट्स का है, वहां पर आज एक एटम बम बनाने का क्या खर्च पड़ता है, वह है और वह कोई उन्होंने भारत का या दूसरी जगह का नहीं बताया या बनाया। आज सबेरे ही मेरी डा० भाभा से बात हुई है। उन्होंने बिल्कुल साफ मुझे बताया है कि एक प्लांट आज अगर एस्टेबलिश करना है, कायम करना है चाहे वह प्लूटोनियम से बनाना है या किसी और चीज़ से, उसकी ट्रेमेंडस कास्ट आयेगी, एक बहुत बड़ा खर्चा आयेगा। यह खुद उन्होंने आज सबेरे बातचीत में बताया है। यह मुनासिब नहीं है कि हम एक छोटा टुकड़ा यहां से ले लें, एक टुकड़ा कहीं और से ले लें बयान का और उसको पेश कर दें। इस तरह से ला कर एक फिगर को पेश करना ठीक नहीं है।

Shri N. C. Chatterjee: Has the Prime Minister conveyed to Dr. Bhabha the desirability of not issuing such statements without reference to the Prime Minister?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : डा० भाभा के बयान को अगर चटर्जी साहब पूरा पढ़ेंगे तब वह बहुत असानी से समझ सकते हैं कि क्या रेफ्रेंस था, क्या कंटैक्स्ट था क्या उनका मतलब था। उनके वक्तव्य को, उनके बयान को, उनके स्टेटमेंट को पूरी तरह से स्टडी करें, देखें तब आप साफ इस नतीजे पर . . . . .

Shri Nambiar: What is circularised to us gives emphasis on incentive to production.

Shri Lal Bahadur Shastri: No, it is not so.

अगर आप पढ़ें तो इसको स्वीकार करेंगे। अंग्रेजी में बोलने लगता हूं, इसलिए पहले कोरेक्ट कर लेता हूं। लोग यह कहते हैं कि डा० भाभा कहते हैं कि एटम बम बनाने पर 18 लाख, 17 लाख खर्च आयेगा, यह गलत है। यह डा० भाभा ने कहा ही नहीं। आज भी सुबह उन्होंने कहा कि यह यू० एस० की फिगर है, जो उनकी मैनुफेक्चर की योजना है, या उसकी कास्ट

[Shri Lal Bahadur Shastri]

की जो बात है बनाने की यह उसमें लिखा हुआ है। मुझे कोई सन्देह नहीं है इसमें। आबवियसली उन्होंने कहा है कि यह तो वहां की कास्ट है।

मैंने उस दिन भी कहा था कि यू० एस० का डिवेलेपमेंट और विकास इतनी ऊपर तक पहुंच गया है या यू० एस० एस० आर० का इतनी ऊपर तक पहुंच गया है कि उनके यहां इसका चीपर कुछ होना या कम में पड़ना सम्भव है। लेकिन हमारे यहां तो सारा सक्रैच से होना है, जिस हद तक हमने काम किया है, उससे हमको आगे बढ़ता है और इसके माने हैं ट्रेमंडस कास्ट, बहुत बड़ा खर्च और सारी हमारी इकोनोमी, सारी हमारी पालिसी . . . . .

Shri H. N. Mukerjee: I am sorry to interrupt. Will the Prime Minister please ensure that eminent people like Dr. Bhabha, who happens to be an official of his Ministry, are not encouraged to make statements which unnecessarily give rise to complications and unpleasant misunderstandings?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : यह ठीक है जो मुखर्जी साहब ने कहा। डा० भाभा ने खुद कहा है कि मैं कोई पालिसी स्टेटमेंट नहीं कर सकता हूं। न ही मैं ऐसा करना चाहूंगा। कारण यह है कि पालिटिकल डिसिशन यह एंटायरली है और इसको गवर्नमेंट को करना है, एटम बम बनाने के बारे में गवर्नमेंट को ही फैसला करना है और किसी को नहीं। कोई आफिशल पालिसी पर, नीति पर अपना डिसिशन नहीं दे सकता है या स्टेटमेंट या वक्तव्य नहीं दे सकता है। यह तो गवर्नमेंट का काम है और उसको ही करना होगा। लेकिन मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उनके बयान को आबजैक्टक्ली पढ़ना चाहिय और पढ़ने के बाद तब देखना चाहिय कि आया उन्होंने साइंटिफि तरीके पर उस सब्जैक्ट की स्टडी करने की कोशिश की है या नहीं। उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की है।

एक दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं। इसमें कोई गांधी जी को लाने की बात नहीं है और न जवाहरलाल जी को लाने की बात है। लेकिन मारेल एसपेक्ट को हम बिल्कुल निकाल दें यह ठीक नहीं है। एक व्यक्ति एक इंडिविजुअल की हैसियत से और आप सब के खयाल से मैं कहता हूं, सारे हिन्दुस्तान की ट्रेडीशंज और प्रेस्टीज के खयाल से कहता हूं, कि इसको हमें बिल्कुल निकाल नहीं देना चाहिये। उस दिन मैंने आपसे कहा था कि मैं मारेल एसपेक्ट को इस वक्त पेश नहीं करना चाहता हूं क्योंकि नाथ पाई साहब ने बड़ा मजाक किया था महात्मा गांधी का, लाल बहादुर शास्त्री का—नाम तो नहीं लिया था लेकिन कुछ उनका मंशा उस तरह का था—इसी लिए मैंने कहा था कि मैं मारेल एस्पैक्ट को लेना नहीं चाहता हूं। मारेल एस्पैक्ट इसका यह है कि यह एक इंडिविजुअल की बात नहीं है। आज सवाल यह है कि एक आप कत्ल करते हैं, तलवार के एक झटके से और एक आप मर्डर करते हैं या कत्ल करते हैं एक छुरी लेकर या ब्लेड लेकर आप धीरे धीरे काटते हैं तो क्या कुछ मारेल एस्पैक्ट उसमें है या नहीं है? मैं कहता हूं कि एक तो वह किलिंग है जो आप किसी कनवैंशनल वैपन से करते हैं और एक किलिंग एटम बम से करने की है जिसमें आप लाखों इन्नोसेंट आदमियों को एक साथ बरबाद कर देते हैं जिन्दगी भर के लिए, उनके जिन्दगी भर के लिए कैंसर इन आइज, कैंसर इन स्टमक कैंसर इन लैंग्ज हो जाता है, कम्प्लीट ह्यूमैनिटी के साथ, सारे मैनकाइंड के साथ खेलना है, ज्यादती और जुल्म करना है। इसलिए इसका मारेल एस्पैक्ट भी तो है . . . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अपनी रक्षा करने के लिए आप इसका प्रयोग करेंगे—

श्री लाल बहादुर शास्त्री : यह लाठी जिसके पास रहती है तो वह अपने से भी कभी कभी चलने लगती है । उसको आप छोड़ दीजिये । सवाल यह नहीं है ।

मैं एक दो मिनट में ख़त्म करना चाहता हूं । मैं माननीय मुखर्जी साहब से बिल्कुल सहमत हूं कि यह जो वैपन है, यह जो हथियार है यह उस तरह का है ही नहीं जो कि मारने के लिए हो या जो कि दुश्मन का जवाब देने के लिए हो, यह तो मनुष्यता को तबाह करने के लिए, बरबाद करने के लिए है और इसलिए मारेल एस्पैक्ट की बात अगर भारत अपने दिमाग में नहीं रख सकता, अगर हिन्दुस्तान के रहने वाले अपने दिल में नहीं रख सकते हैं और यह भावना अगर भारत के अन्दर से मिट गई और यह आ गई कि हम तबाही और बरबादी करेंगे मैनकाइंड की, तो मैं यह नहीं कहता कि हम बड़े ऊंचे हैं, लेकिन मैं यह समझता हूं कि भारत में कुछ भावना है ऊंचाई की, वह नहीं रह पायेगी । एक उस तरह की डिसटरबैंस में, एक उस तरह के डिसग्रार्डर में, एक केग्रोस में, और इनह्यूमैनिटी में हम विश्वास नहीं करते हैं । और कुछ थोड़ा काम हमने इसमें किया है और आगे भी करना चाहते हैं ।

17 hrs.

मैंने कहा कि आज हिन्दुस्तान में दो तीन चार एटम बम बन सकते हैं, हो सकता है कि इंडोनेशिया भी बना ले, खबर आती है कि शायद इजराइल भी बना लेगा । इस तरह की खबरें अखबारों में आती रहती हैं । मैं इसको बहुत खतरनाक बात समझता हूं । एटम बम का बढ़ाना ख़तरनाक है । आज एक बनाता है, दूसरा कल बनाता है, तीसरा आगे बनाता है । इससे ह्यूमैनिटी और दुनिया की शान्ति ख़तरे में पड़ जाएगी, इसकी कहीं रुकावट नहीं है ।

आज दुनिया में दो बड़ी एटमिक पावर्स हैं अमरीका और रूस । फ्रांस ने भी अपना एटम बम बना लिया है और चाइना ने भी एटम बम का विस्फोट किया है । लेकिन ज्यादा एटम बनाना इसके लिए आसान नहीं है । इन छोटी पावर्स के पास दो-दो, चार-चार बम हो भी जाएं तो इसको क्या फर्क पड़ सकता है । अगर इनके पास इतने बम हों जिससे रूस और अमरीका को खतरा हो तब तो कोई बात भी है । आज अमरीका और रूस के पास इतने बम हैं कि वे चाहें तो फ्रांस जैसे देशों को बात की बात में खत्म कर सकते हैं । ये बड़े देश हैं, अगर इन पर कोई बम डाला भी जायेगा तो इनके छोटे हिस्से पर असर होगा ।

मेरे पास पूरी रिपोर्ट नहीं है, लेकिन यूनाइटेड किंगडम ने कहा है कि हमको इस मुकाबले में नहीं पड़ना है । आखिर यूनाइटेड किंगडम के सामने गांधी के नान वायलेंस वाली बात नहीं है । वे लोग प्रेक्टिकल आदमी हैं, रियलिस्ट हैं । अपने देश की भलाई के लिए उन्होंने यह फैसला किया है । इसलिए मैं आपसे कहता हूं कि यह कहना कि यहां भी बम बना दो वहां भी बना दो ठीक नहीं है । यह बुद्धिमानी और अक्लमन्दी की बात नहीं है । हमने इस पालिसी को स्वार्थवश नहीं बनाया है कि अभी हम ऐसा ही कहते रहें लेकिन कल हम चाहे कुछ और कर लेंगे । हमने केवल इसे इसलिए नहीं कहा है कि यह हमारे मतलब की बात है । हमने यह नहीं सोचा कि आज यह कह दें और कल कुछ और कर लेंगे । यह कोई साउंड पालिसी की बात नहीं हो सकती । आखिर हमको देखना चाहिए कि थोड़े दिन पहले भारत ने क्या कहा था । काहिरा में हम क्या कह चुके हैं । अगर हम इस तरह पर अपनी नीतियों को बदलने लगें, तो न तो यह हमारे देश के भले के लिए होगा और न इससे दुनिया का भला होगा । इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस चीज़ को इस लेविल तक मत ले जाइए कि हम बम इसलिए नहीं बनाते कि हम कमजोर हैं या

[श्री लाल बहादुर शास्त्री]

बुजदिल हैं । हम कमज़ोरी की वजह से ऐसी बात नहीं कहते हैं । अहिंसा के मानी बुज़दिली के नहीं है । एक बार गांधी जी से महिलाओं ने पूछा कि क्या हम छुरी रख सकती हैं और उसका इस्तेमाल कर सकती हैं, तो उन्होंने कहा कि तुम अहिंसा से मुकाबला नहीं कर सकतीं इसलिए तुम कायरता के बजाय छुरी रखो । नान वायलेंस के मानी बुज़दिली नहीं हैं । जो फैसला हम करते हैं वह देश के हित की रक्षा के लिए करते हैं । हम यह नहीं कहते कि आज जिस जगह पर हैं वहां बैठे रहेंगे । हम दुनिया को देखेंगे और जो उचित होगा वही फैसला करेंगे ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैंने आपके आने से पहले हाथी जी से अणु विभाग के बारे में कुछ कहा था । पता नहीं उनके नोट में उसका जिक्र है या नहीं ? उसका जवाब मुझे नहीं मिला । मैं ने कहा था कि इसी सदन में भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने कहा था कि चीन अणुशक्ति के विकास में हिन्दुस्तान से दस साल पीछे है । मैं ने पूछा था कि यह गलत जानकारी किस तरह से अणुशक्ति विभाग ने उनको दी । क्या इसका कारण यह है कि एक ही व्यक्ति यह सारा काम कर रहा है । वही उसका अध्यक्ष है, वही सेक्रेटरी है । इन दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए, मैं ने सुझाव दिया था कि अणुशक्ति के विकास के लिए वैज्ञानिकों का एक बोर्ड बनाया जाये जो इस सारे प्रश्न पर विचार कर सके ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : आपने यह कहा था यह ठीक है । हाथी जी के नोट में यह है । जो दस साल की बात पंडित जी ने कही थी उसके सम्बन्ध में मैं ने आज एक नोट दफ्तर में देखा है उससे पता चलता है कि जब चाऊ एन लाई आये थे और उन्होंने हमारा ट्राम्बे का एटामिक आरगेनाइजेशन देखा था तो कहा था कि चाइना अभी भारत से इस डेवेलपमेंट में 15 साल पीछे है । यह चाऊ एन लाई साहब ने उस समय बयान दिया था ।

Shri Ranga (Chittoor): He misled us.

श्री लाल बहादुर शास्त्री : मैं यह मानता हूं कि उन्होंने हमको मिसलीड किया होगा । मगर जो दस बरस की बात पंडित जी ने कही थी उसमें दो चार बरस का इधर उधर हो सकता है, उसमें कोई वैसी गलती नहीं है। हमारे एम्बेसेडर चीन में पणिक्कर साहब थे। उन्होंने खबर दी थी । यह बात मुझे यहां कहनी नहीं चाहिए थी। उनकी रिपोर्ट काफी सही है । लेकिन मैं उसमें जाना नहीं चाहता ।

यह ठीक है कि इस एटमिक इनरजी कमीशन के चेयरमैन भाभा साहब हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: वही सेक्रेटरी भी हैं।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : वह एक पूरा कमीशन है और उसमें बहुत से साइंटिस्ट हैं, उनका सलाह मशविरा बराबर होता रहता है ।

Mr. Deputy-Speaker: Shri Kachhavaiya will reply on the next non-official day.

Shri Ranga: I want an elucidation on one or two points.

Shri Nath Pai *rose—*

Mr. Deputy Speaker: The non-official time is over. We have now to take up the official business.

Shri Ranga: I did not wish to interrupt him. If I had interrupted him, he would have given a reply. I did not wish to do that.

Mr. Deputy-Speaker: All right.

Shri Ranga: I saw in some of the papers this morning that this attitude that the Prime Minister has just now outlined, with which we are in agreement from this side of the House, is only his personal attitude and that his Cabinet has not yet 'okeyed' it. I would like to know whether he has taken this attitude as a result of the decision taken by the whole of his Cabinet and that the whole of his Cabinet is behind him over this issue.

There is one other point and that point is only this. I only wish to emphasise what has been already said by Shri Hiren Mukerjee. We all have very great respect and admiration for Dr. Bhabha and we have also valued his services and brilliance because he is one of the topmost scientists. It was unfortunate that he had been given this administrative job also. But anyhow, whatever might be the reading of the Prime Minister from Dr. Bhabha's statement, quite a large section of our people have drawn impression which is entirely different from what the Prime Minister has drawn. This has created, I am sure, quite a lot of embarrassment not only to so many of us but also to the Prime Minister and the Government. We sincerely hope that hereafter the Prime Minister and his Government will take sufficient care to see that not only Dr. Bhabha but other scientists also are approached with the national request that whatever they have to say in regard to these very delicate matters should better be communicated to the Government first before they go to the radio or they go to the press.

Shri Nath Pai: The hon. Prime Minister twice referred to certain remarks which I made. I want to give explanations because I was also misunderstood by him and by a section of the press. My exact words are that it is enough to produce a Gandhi once in a century, and India's glory is enhanced, so far as I could see, which cannot be measured if we produce a Gandhi in a century. Then I said what I had in mind, which continues to be my main way of thinking. There was no intention to ridicule Shri Shastri that he was trying to imitate Gandhiji. I think we all in our humble way try to claim to be inspired by Gandhiji's teachings and his life. What I said was that I was having all the while a bearing from what I had read in the *Raghuvamsa*. There is a *vatidharma* and a *rajadharma*. When you ascend the throne, you try to suppress your inner urges like being a *sanyasi* and take some of the unpleasant decisions. As it is said there:

"Balam aartabhayopashantaye"

I could not quote it because I was rushing. And this is what he has to do; I say that even if perhaps his inner urges point to such a path, since destiny has now put him in position, this is what he has to do.

Let men mention . . .

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member is making another speech.

Shri Nath Pai: You will kindly excuse me. Explanation is also part of it. Since he has twice referred to it in a feeling way, you may please permit me to give my explanation.

Secondly, let me assure him that there was no intention of ridiculing him. But in my own way I was trying to emphasise that the *dharma* of the *yati* and that of the one who ascends a throne are different, and it is useful to bear this in mind.

[Shri Nath Pai]

There is one other little point that I would like to make, because I have been quoted. I found in the text of my speech that I never said that we should manufacture. All I pleaded was this that it cannot be a policy to say that we shall not produce. This proclamation, I claim, cannot be a reply to China. It may have a moral connotation which is always welcome, but what we need today is to evolve a coherent full policy, and, therefore, I had said that I would require a special debate in respect of which I had given notice of a motion. I would like to be properly understood in the light of what I had said.

Shri Sheo Narain (Bansi): Mr. Deputy-Speaker, Sir . . .

Mr. Deputy-Speaker: Does the hon. Member want to put any question?

Shri Sheo Narain: No, I want to speak on the subject.

Mr. Deputy-Speaker: No speeches can be allowed now.

Shri Narendra Singh Mahida: May I seek one clarification? The late Sardar Vallabhbhai Patel said in one of his last speeches in Delhi that 'We shall reply *ahimsa* by *ahimsa* and force by force'.

An Hon. Member: *Talwar se talwar.*

Shri Narendra Singh Mahida (Anand): It was a very wise policy. Of course, I do not say that we should return atom bomb by atom bomb. But, certainly, if we do not intend to manufacture atom bombs, we can have assistance from those countries which have those bombs. If such an opportunity arises—we do not wish it but if it arises—will the Prime Minister make use of the help from those countries which possess those atom bombs and seek their assistance?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : मैं सिर्फ एक बात जो पहले आप ने कही, रंगा साहब की कैबिनेट की बात थी उस के बारे में अर्ज करना चाहूंगा । यह बात ठीक है कि मैं ने उस दिन भी अपने जवाब में यह कहा था कि केबिनेट ने इस को फौरमली विचार नहीं किया है, इसे कंसिडर नहीं किया है लेकिन मेरा विश्वास है कि मैं आज जो बात कह रहा हूं वह हमारी पुरानी पालिसी है । उसमें मैं ने कोई नई बात नहीं कही थी । मैं जवाहरलाल जी का नाम और गांधी जी का नाम भी डर से नहीं लेता । लोग यह समझते हैं कि हम जवाहरलाल जी का नाम और गांधी जी का नाम लेकर हम सपोर्ट सीक करते हैं लेकिन मैं यह चीज साफ़ कर दूं कि हम यह नहीं चाहते कि उनके नाम लेकर हम सपोर्ट सीक करें . . .

Shri Ranga: But we are not ashamed of Mahatma Gandhi and the traditions that he has left behind.

Shri Lal Bahadur Shastri: May I say that there are other friends who have said that, not once but more than once.

जो मैं कह रहा हूं वह गवर्नमेंट की पुरानी पालिसी रही है और मुझे कोई शक नहीं है कि आज भी गवर्नमेंट की वही नीति है फिर भी हम जरूर इस को फौरमली किसी न किसी समय केबिनेट में डिसकस करेंगे ।

इस के अलावा श्री नाथपाई ने जो कुछ कहा उस के लिए मैं उन का बहुत अनुगृहीत हूं । लेकिन मै केवल उन को यह ही याद दिलाऊंगा कि दुनिया में कोई भी चीज आख़िरी नहीं होती है । जब तक हियुमन बीइंग है, उस का दिमाग है, उस की एनजैनुएंटी है, उस में डिस्क्रिमनेशन है, उस में

डैलीब्रेशन है, तब तक दुनिया में नई चीजें इवोल्व होती रहेंगी । यह भी कोई तय बात नहीं है कि यति का धर्म दूसरा है और एक ऐडमिनिस्ट्रेटर का धर्म दूसरा है । इस तरीक़े से भी आप इस को डिवाइड नहीं कर सकते हैं । आखिर इस देश की फ्रीडम बैटिल को, इस देश की आज़ादी की लड़ाई को एक यति ने चलाया था और जिस टैकनीक का उसने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में प्रयोग किया था और उसको चलाया था वही टैकनीक उस के बाद तमाम दुनिया में डैवेलप की गई । आज तक दुनिया में किसी ने इतने बड़े पैमाने पर नहीं की थी जैसी कि हम ने की । मैं ने कहा कि नौन वाएलेंस इंडिविजुएल्स के धर्म की चीज़ रही लेकिन गांधी जी ने उस टैकनीक को डैवेलप कर के उस नौन वाएलेंस को फ्रीडम स्ट्रगल का लाखों आदमियों का एक वैपन बनाया । इसलिए इंडिया को ही इस चीज़ को प्रोड्यूस करने का श्रेय हासिल है । यह टैकनीक वही डैवेलप कर सकता था क्योंकि उस देश में गांधी जी जैसे एक आदमी पैदा हुए । इसलिए यह कह देना कि यति और ऐडमिनिस्ट्रेटर बिलकुल अलग हैं यह ठीक नहीं है । यह हमारे देश की परम्परा रही है कि अर्जुन के पीछे कृष्ण थे और आप के ही प्रदेश में शिवा जी के पीछे कौन था, एक साधू और संत था । यह हमारे देश की परम्परा रही है इसको न भूलियेगा ।

Mr. Deputy-Speaker: Shri Kachhavaiya will reply the next day.

Shri Narendra Singh Mahida: My question has not been replied to.

Mr. Deputy-Speaker: Call attention notice. Shri Banerjee.

17.15 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTERS OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

(ii) LOCKOUT IN NEW JEMEHARI KHAS COLLIERY

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): I call the attention of the Minister of Labour and Employment to the following matter of urgent public importance and request that he may make a statement thereon:

"The lockout in new Jemehari Khas colliery without notice involving unemployment to nearly one thousand workers."

The Minister of Labour and Employment (Shri D. Sanjivayya): The Chief Labour Commissioner (C), New Delhi, received two telegrams dated the 20th November, 1964 and 21st November, 1964 from Shri Sunil Sen, Organising Secretary, Colliery Mazdoor Sabha Asansol and the Manager of the New Jemehari Khas Colliery, respectively. While the Sabha alleged that the management of New Jemehari Khas Colliery had locked out all the workmen with effect from the 20th November, 1964, the management of the colliery complained that workers, numbering about 340, had illegally stopped work from 1st shift of the 20th November, 1964.

2. According to reports the facts of the case are that the management of New Jemehari Khas Colliery had to stop all underground working on the 27th and 28th August, 1964 in pursuance of the orders issued by the Deputy Chief Inspector of Mines in their Pits No 18 and 19 on grounds of safety. Consequent upon this closure, the workers of Nos. 18 and 19 Pits, numbering about 371, were laid off on 31-8-1964. Since the management had not given any notice of lay-off and had also not paid any lay-off compensation to the entitled workmen, the Colliery Mazdoor Sabha by its